Shri Vivekanandajaya Ashtakam

श्रीविवेकानन्दजयाष्टकम्

Document Information

Text title : Shri Vivekanandajaya Ashtakam

File name : vivekAnandajayAShTakam.itx

Category : deities_misc, gurudev, rAmakRiShNa, aShTaka

Location : doc_deities_misc

Author : Panchugopala Bandyopadhyaya

Proofread by : Aruna Narayanan

Description-comments : rAmakRiShNastotramAlA, stavanAnjali

Acknowledge-Permission: Ramakrishna Shivananda Mission, Varasat

Latest update : June 12, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 12, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीविवेकानन्दजयाष्टकम्

जयतु जयतु शश्वद् वीरचूडामणिर्वै
सकल-मनुज-पञ्च-क्लेश-हारी विवेकः ।
विजित-निखिल-मोहोब्रह्म-विज्ञान-निष्ठ-
स्त्रिभुवन-मणि-दीपो भास्वरोऽसौ नरेन्द्रः ॥ १॥

जयतु जयतु शश्वत्त्यागिचूडामणिर्वै
दलित-कनक-कामो गीत-वादित्र-शूरः ।
अखिल-सुगुण-शाली कोष-मुक्तासि-धारः
प्रतिभटकुलभीतिर्वज्रनिर्घोषकारी ॥ २॥

जयतु जयतु शश्वन्यासि-चूडामणिर्वै
त्रिगुण-गलित-रूपो निर्विकल्पो यतीन्द्रः ।
विदित-परम-हंसो विश्व-धर्म-प्रतीकः
कृत-युग-पथिकृन्नूदार-सङ्घातिकर्ता ॥ ३॥

जयतु जयतु शश्वज् ज्ञानि-चूडामणिर्वै
परिणत-गुरु-भावो ब्रह्मचार्यूर्ध्वरेताः ।
सुगत-बहल-तन्त्रो रामकृष्णैकसारो
नव-युग-वर-नेता विश्व-धर्माध्व-दीपः ॥ ४॥

जयतु जयतु शश्वद् वाग्मि-चूडामणिर्वै
ह्यमलिन-मत-वादी निर्जिता शेष-दुर्धीः ।
प्रथित-नृ-मणि-मान्यः पश्चिमोर्वी-प्रचारी
त्वशरण-गलदश्रुः प्रेम-भूमि-प्रतिष्ठः ॥ ५॥

जयतु जयतु शश्वत् कर्मि-चूडामणिर्वै
परम-सुकृत-वर्षी धर्म-संज्ञा-विकासी ।
नरकुल-शुभ-कारी वेद-वेदान्त-वेत्ता
कमल-नयन-वक्त्रो देव-देवप्रभावः ॥ ६॥

जयतु जयतु शश्वद् भक्तचूडामणिर्वै
विधिहरि-हर-वन्द्य-श्रीमहाकालिकेष्टः ।
अकरुणजनशान्त्या मूर्तरुद्रोऽवतीर्ण-
स्त्ववनत-सुसहायः शारदान्यस्त-भारः ॥ ७॥

जयतु जयतु शश्वद् योगिचूडामणिर्वै
धृत-चरम-समाधिर्निर्विकल्प-प्रलीनः ।
निभृत-गिरि-विहारी जीव-दुःखासहिष्णू-
र्गत-जल-निधि-पारो भारत-श्रीर्जयिष्णुः ॥ ८॥

अथ स्तव-कुसुमाञ्जलिः
आचार्याय प्रभु-गुणवते जीव-दुःखान्तकाय
ब्रह्मज्ञाय श्रुति-रसभुजे-ब्रह्म-विज्ञान-दात्रे ।
निर्मायाय भ्रम-कुल-भिदे ध्यान-सिद्धाय भूम्ने
भक्त्याकीर्णं स्तवन-कुसुमं श्री नरेन्द्राय वौषट् ॥

इति प्राध्यापकपाँचुगोपाल-बन्द्योपाध्यायविरचितं
“श्रीमद्विवेकानन्दजयाष्टकम्” सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan

Shri Vivekanandajaya Ashtakam

pdf was typeset on June 12, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*